أُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَ
أُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٥

5. वोही अपने रब की तरफ़ से हिदायत पर हैं और वोही ह़क़ीक़ी कामयाबी पानेवाले हैं।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ
ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا
يُؤْمِنُوْنَ ۝٦

6. बेशक जिन्हों ने कुफ़्र अपना लिया है उनके लिए बराबर है ख़्वाह आप उन्हें डराएं या न डराएं, वोह ईमान नहीं लाएंगे।

خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى
سَمْعِهِمْ ؕ وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۖ
وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝٧ ع ١

7. अल्लाह ने उन के दिलों और कानों पर मोहर लगा दी है और उन की आंखों पर पर्दह (पड़ गया) है और उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ
وَ بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ مَا هُمْ
بِمُؤْمِنِيْنَ ۝٨ وقف لازم

8. और लोगों में से बा'ज़ वोह (भी) हैं जो केहते हैं हम अल्लाह पर और यौमे क़ियामत पर ईमान लाए हालां कि वोह (हरगिज़) मो'मिन नहीं हैं।

يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ وَ
مَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَ مَا
يَشْعُرُوْنَ ۝٩

9. वोह अल्लाह को (या'नी रसूल ﷺ को) ★और ईमान वालों को धोका देना चाहते हैं मगर (फ़िल ह़क़ीक़त) वोह अपने आप को ही धोका दे रहे हैं और उन्हें इस का शऊ़र नहीं है।

فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ
مَرَضًا ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۢ بِمَا
كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ۝١٠

10. उन के दिलों में बीमारी है, पस अल्लाह ने उन की बीमारी को और बढ़ा दिया और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है, इस वजह से कि वोह झूट बोलते थे।

★ इस मुक़ाम पर मुज़ाफ़ मह़ज़ूफ़ है जो कि ''रसूल'' है या'नी ''युख़ादिऊ़नल्ला-ह'' केह कर मुराद ''युख़ादिऊ़-न रसूलल्ला-ह'' लिया गया है। अक्सर अइम्मए मुफ़स्सिरीन ने येह मा'ना बयान किया है। बतौरे ह़वाला मुलाह़ज़ा फ़रमाएं : तफ़्सीरे अल क़ुर्तुबी, अल बैज़ावी, अल बग़वी, अन्नस्फ़ी, अल कश्शाफ़, अल मज़हरी, ज़ादुल मसीर और अल ख़ाज़िन वग़ैरह।

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِي
الْاَرْضِ ۙ قَالُوْٓا اِنَّمَا نَحْنُ
مُصْلِحُوْنَ ﴿١١﴾

11. और जब उन से कहा जाता है कि ज़मीन में फ़साद बपा न करो, तो केहते हैं : हम ही तो इस्लाह़ करनेवाले हैं।

اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ
لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢﴾

12. आगाह हो जाओ, येही लोग (ह़क़ीक़त में) फ़साद करने वाले हैं मगर उन्हें (इस का) एह़सास तक नहीं।

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ
النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ
السُّفَهَآءُ ؕ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ
وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣﴾

13. और जब उन से कहा जाता है कि (तुम भी) ईमान लाओ जैसे (दूसरे) लोग ईमान ले आए हैं, तो केहते हैं क्या हम भी (उसी तरह) ईमान ले आएं जिस तरह (वोह) बेवक़ूफ़ ईमान ले आए, जान लो, बे वक़ूफ़ (दर ह़क़ीक़त) वोह ख़ुद हैं लेकिन उन्हें (अपनी बेवक़ूफ़ी और हल्केपन का) इल्म नहीं।

وَ اِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا
اٰمَنَّا ۚ وَ اِذَا خَلَوْا اِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ
قَالُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ ۙ اِنَّمَا نَحْنُ
مُسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٤﴾

14. और जब वोह (मुनाफ़िक़) अह्ले ईमान से मिलते हैं तो केहते हैं हम (भी) ईमान ले आए हैं और जब अपने शयतानों से तन्हाई में मिलते हैं तो केहते हैं हम यक़ीनन तुम्हारे साथ हैं, हम (मुसल्मानों का तो) मह़ज़ मज़ाक़ उड़ाते हैं।

اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَ يَمُدُّهُمْ فِيْ
طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٥﴾

15. अल्लाह उन्हें उन के मज़ाक़ की सज़ा देता है और उन्हें ढील देता है (ताकि वोह ख़ुद अपने अंजाम तक जा पहुंचें) सो वोह ख़ुद अपनी सरकशी में भटक रहे हैं।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ
بِالْهُدٰى ۪ فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ
وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٦﴾

16. येही वोह लोग हैं जिन्हों ने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदी लेकिन उन की तिजारत फ़ाइदे मन्द न हुई और वोह (फ़ाइदे मन्द और नफ़ा' बख़्श सौदे की) राह जानते ही न थे।

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ
نَارًا ۚ فَلَمَّآ اَضَآءَتْ مَا حَوْلَهٗ

17. उन की मिसाल ऐसे शख़्स की मानिन्द है जिस ने (तारीक माह़ौल में) आग जलाई और जब उस ने गिर्दो

ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِيْ
ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧﴾

नवाह़ को रौशन कर दिया तो अल्लाह ने उन का नूर सल्ब कर कर लिया और उन्हे तारीकियों में छोड़ दिया अब वोह कुछ नहीं देखते।

صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿١٨﴾

18. येह बेहरे, गूंगे और अंधे हैं पस वोह (राहे रास्त की तरफ़) नहीं लौटेंगे।

اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّ
رَعْدٌ وَّبَرْقٌ ۚ يَجْعَلُوْنَ اَصَابِعَهُمْ فِيْٓ
اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ؕ
وَاللّٰهُ مُحِيْطٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾

19. या उन की मिसाल उस बारिश की सी है जो आस्मान से बरस रही है जिस में अंधेरियां हैं और गरज और चमक (भी) है तो वोह कड़क के बाइस़ मौत के डर से अपने कानों में उंगलियां ठोंस लेते हैं, और अल्लाह काफ़िरों को घेरे हुए है।

يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ؕ
كُلَّمَآ اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ ۙ وَاِذَآ
اَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾ ع ٢ ١٣ ٢

20. यूं लगता है कि बिजली उन की बीनाई उचक ले जाएगी, जब भी उन के लिए(माहौल में) कुछ चमक होती है तो उस में चलने लगते हैं और जब उन पर अंधेरा छा जाता है तो खड़े हो जाते हैं, और अगर अल्लाह चाहता तो उन की समाअ़त और बस़ारत बिल्कुल सल्ब कर लेता, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ
خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿٢١﴾

21. ऐ लोगो ! अपने रब की इबादत करो जिस ने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को (भी) जो तुम से पेश्तर थे ता कि तुम परहेज़गार बन जाओ।

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا
وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً ۖ وَّاَنْزَلَ مِنَ
السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ
الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا
لِلّٰهِ اَنْدَادًا وَّاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾

22. जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श और आस्मान को इमारत बनाया और आस्मानों की तरफ़ से पानी बरसाया फिर उस के ज़रीए तुम्हारे खाने के लिए (अन्वाओ अक़्साम के) फल पैदा किए, पस तुम अल्लाह लिए शरीक न ठेहराओ हालांकि तुम (ह़क़ीक़ते ह़ाल) जानते हो।

وَ اِنۡ كُنۡتُمۡ فِىۡ رَيۡبٍ مِّمَّا نَزَّلۡنَا عَلٰى
عَبۡدِنَا فَاۡتُوۡا بِسُوۡرَةٍ مِّنۡ مِّثۡلِهٖ ۖ
وَادۡعُوۡا شُهَدَآءَكُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ
اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿۲۳﴾

23. और अगर तुम इस (कलाम) के बारे में शक में मुब्तिला हो जो हम ने अपने (बरगुज़ीदह) बन्दे पर नाज़िल किया है तो इस जैसी कोई एक सूरत ही बना लाओ, और (इस काम के लिए बेशक) अल्लाह के सिवा अपने (सब)हिमायतियों को बुला लो अगर तुम (अपने शक और इन्कार में) सच्चे हो।

فَاِنۡ لَّمۡ تَفۡعَلُوۡا وَلَنۡ تَفۡعَلُوۡا
فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِىۡ وَقُوۡدُهَا النَّاسُ
وَالۡحِجَارَةُ ۖ اُعِدَّتۡ لِلۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۲۴﴾

24. फिर अगर तुम ऐसा न कर सको और हरगिज़ न कर सकोगे तो उस आग से बचो जिस का ईंधन आदमी (या'नी काफ़िर) और पथ्थर (या'नी उन के बुत) हैं, जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई।

وَ بَشِّرِ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ
تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ ؕ كُلَّمَا رُزِقُوۡا مِنۡهَا
مِنۡ ثَمَرَةٍ رِّزۡقًا ۙ قَالُوۡا هٰذَا الَّذِىۡ
رُزِقۡنَا مِنۡ قَبۡلُ ۙ وَاُتُوۡا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ
وَلَهُمۡ فِيۡهَاۤ اَزۡوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّهُمۡ
فِيۡهَا خٰلِدُوۡنَ ﴿۲۵﴾

25. और (ऐ ह़बीब !) आप उन लोगों को खुश ख़बरी सुना दें जो ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे कि उन के लिए (बहिश्त के) बाग़ात हैं जिन के नीचे नेहरें बेहती हैं, जब उन्हें उन बाग़ात में से कोई फल खाने को दिया जाएगा तो (उस की ज़ाहिरी सूरत देख कर) कहेंगे येह तो वोही फल है जो हमें (दुन्या में) पहले दिया गया था, हालांकि उन्हें (सूरत में) मिलते जुलते फल दिए गए होंगे, उन के लिए जन्नत में पाकीज़ा बीवियां (भी) होंगी और वोह उन में हमेशा रहेंगे।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَسۡتَحۡىٖۤ اَنۡ يَّضۡرِبَ مَثَلًا
مَّا بَعُوۡضَةً فَمَا فَوۡقَهَا ؕ فَاَمَّا
الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا فَيَعۡلَمُوۡنَ اَنَّهُ الۡحَـقُّ
مِنۡ رَّبِّهِمۡ ۚ وَ اَمَّا الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا
فَيَقُوۡلُوۡنَ مَاذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا
مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهٖ كَثِيۡرًا ؕ وَ يَهۡدِىۡ

26. बेशक अल्लाह इस बात से नहीं शरमाता कि (समझाने के लिए) कोई भी मिसाल बयान फ़रमाए (ख़्वाह) मच्छर की हो या (ऐसी चीज़ की जो हिक़ारत में) उस से भी बढ़ कर हो, तो जो लोग ईमान लाए वोह खूब जानते हैं कि येह मिसाल उनके रब की तरफ़ से ह़क़ (की निशान दही) है, और जिन्हों ने कुफ़्र इख़्तियार किया वोह (उसे सुन कर येह) केहते हैं कि ऐसी तम्सील से अल्लाह को क्या सरोकार ? (इस त़रह़) अल्लाह एक ही बात के ज़रीए़ बहोत से लोगों को गुमराह ठेहराता है और

وقف لازم

بِهٖ كَثِيْرًا ۭ وَ مَا يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا
الْفٰسِقِيْنَ ۙ ﴿٢٦﴾

बहुत से लोगों को हिदायत देता है, और इस से सिर्फ़ उन्ही को गुमराही में डालता है जो (पेहले ही) ना फ़रमान हैं।

الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ
بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۠ وَ يَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ
اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي
الْاَرْضِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٢٧﴾

27. (येह ना फ़रमान वोह लोग हैं) जो अल्लाह के अ़हद को उस से पुख़्ता करने के बाद तोड़ते हैं। और उस (त-अ़ल्लुक़) को काटते हैं जिस को अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और ज़मीन में फ़साद बपा करते हैं। येही लोग नुक़्सान उठाने वाले हैं।

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَ كُنْتُمْ
اَمْوَاتًا فَاَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ
يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. तुम किस तरह़ अल्लाह का इन्कार करते हो हालां कि तुम बेजान थे। उस ने तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शी, फिर तुम्हें मौत से हम किनार करेगा। और फिर तुम्हें ज़िन्दह करेगा। फिर तुम उसी की तरफ लौटाए जाओगे।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي
الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۤ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى
السَّمَاۗءِ فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ۭ
وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٩﴾ ع ٣ ٩ ٣

29. वोही है जिस ने सब कुछ जो ज़मीन में है तुम्हारे लिए पैदा किया फिर वोह (काइनात के) बालाई ह़िस्सों की तरफ़ मु-तवज्जेह हुवा तो उस ने उन्हें दुरुस्त कर के उन के सात आस्मानी तब्क़ात बना दिए, और वोह हर चीज़ का जाननेवाला है।

وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ اِنِّىْ
جَاعِلٌ فِي الْاَرْضِ خَلِيْفَةً ۭ قَالُوْٓا
اَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا
وَيَسْفِكُ الدِّمَاۗءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ
بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۭ قَالَ اِنِّىْٓ
اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٠﴾

30. और (वोह वक़्त याद करें) जब आप के रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं ज़मीन में अपना नाइब बनाने वाला हूं। उन्हों ने अर्ज़ किया क्या तू ज़मीन में किसी ऐसे शख़्स को (नाइब) बनाएगा जो उस में फ़साद अंगेज़ी करेगा और ख़ूंरेज़ी करेगा ? हालां कि हम तेरी ह़म्द के साथ तस्बीह़ करते रेहते हैं। और (हमा वक़्त) पाकीज़गी बयान करते हैं। अल्लाह ने फ़रमाया : मैं वोह कुछ जानता हूं जो तुम नहीं जानते।

وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَاۗءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ

31. और अल्लाह ने आदम (عليه السلام) को तमाम (अश्याअ

عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ ۙ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِيْ بِاَسْمَآءِ
هٰٓؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾
قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا
عَلَّمْتَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ
الْحَكِيْمُ ﴿٣٢﴾
قَالَ يٰٓاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۚ
فَلَمَّآ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۙ قَالَ
اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ غَيْبَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۙ وَاَعْلَمُ مَا
تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿٣٣﴾
وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا
لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى
وَاسْتَكْبَرَ ۫ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٤﴾
وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ
الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ
شِئْتُمَا ۪ وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ
فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٥﴾
فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا
مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۪ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ
لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ

के) नाम सिखा दिए फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने पेश किया, और फ़रमाया मुझे इन अश्याअ के नाम बता दो अगर तुम (अपने ख़याल में) सच्चे हो।

32. फ़रिश्तों ने अर्ज़ किया, तेरी ज़ात (हर नुक़्स से) पाक है हमें कुछ इल्म नहीं मगर उसी क़द्र जो तू ने हमें सिखाया है, बे शक तू ही (सब कुछ) जाननेवाला हिक्मत वाला है।

33. अल्लाह ने फ़रमाया, ऐ आदम ! (अब तुम) इन्हें इन अश्याअ के नामों से आगाह करो, पस जब आदम (عليه السلام) ने उन्हें उन अश्याअ के नामों से आगाह किया तो (अल्लाह ने) फ़रमाया, क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि मैं आस्मानों और ज़मीन की (सब) मुख़्फ़ी हक़ीक़तों को जानता हूं और वोह भी जानता हूं जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो।

34. (और वोह वक़्त भी याद करें) जब हम ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि आदम (عليه السلام) को सज्दह करो तो सब ने सज्दह किया सिवाय इब्लीस के, उस ने इन्कार और त-कब्बुर किया और नती-ज-तन काफ़िरों में से हो गया।

35. और हम ने हुक्म दिया, ऐ आदम ! तुम और तुम्हारी बीवी इस जन्नत में रिहाइश रखो और तुम दोनों इस में से जो चाहो, जहां से चाहो खाओ, मगर इस दरख़्त के क़रीब न जाना वरना हद से बढ़ने वालों में (शामिल) हो जाओगे।

36. फिर शैतान ने उन्हें उस जगह से हिला दिया और उन्हें उस (राहत के) मुक़ाम से जहां वोह थे अलग कर दिया, और (बिल आख़िर) हम ने हुक्म दिया कि तुम नीचे उतर जाओ, तुम एक दूसरे के दुश्मन रहोगे। अब तुम्हारे लिए

مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٣٦﴾

ज़मीन में ही मुअ़य्यना मुद्दत तक जाए क़रार है और नफ़ा' उठाना मुक़द्दर कर दिया गया है।

فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿٣٧﴾

37. फिर आदम (عليه السلام) ने अपने रब से (आ़जिज़ी और मुआ़फ़ी के) चन्द कलिमात सीख लिए पस अल्लाह ने उन की तौबा क़ुबूल फ़रमा ली, बेशक वोही बहुत तौबा क़ुबूल करनेवाला महरबान है।

قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٨﴾

38. हम ने फ़रमाया, तुम सब जन्नत से उतर जाओ, फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से कोई हिदायत पहुंचे तो जो भी मेरी हिदायत की पैरवी करेगा, न उन पर कोई ख़ौफ़ (तारी) होगा और न वोह ग़मगीन होंगे।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٩﴾ ع

39. और जो लोग कुफ़्र करेंगे और हमारी आयतों को झुटलाएंगे तो वोही दोज़ख़ी होंगे , वोह उस में हमेशा रहेंगे।

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِيْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ ۚ وَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ ﴿٤٠﴾

40. ऐ औलादे या'क़ूब ! मेरे वोह इन्आ़म याद करो जो मैं ने तुम पर किए और तुम मेरे साथ किया हुवा वा'दा पूरा करो मैं तुम्हारे साथ किया हुवा वा'दा पूरा करूंगा, और मुझ ही से डरा करो।

وَاٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ كَافِرٍ بِهٖ ۪ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۫ وَّاِيَّايَ فَاتَّقُوْنِ ﴿٤١﴾

41. और इस किताब पर ईमान लाओ जो मैं ने (अपने रसूल मुह़म्मद ﷺ पर) उतारी (है, हालांकि) येह उसकी (अस्लन) तस्दीक़ करती है जो तुम्हारे पास है और तुम ही सब से पहले उस के मुन्किर न बनो और मेरी आयतों को (दुनिया की) थोड़ी सी क़ीमत पर फ़रोख़्त न करो और मुझ ही से डरते रहो।

وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤٢﴾

42. और ह़क़ की आमेज़िश बातिल के साथ न करो और न ही ह़क़ को जान बूझ कर छुपाओ।

وَ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ
وَ ارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿۴۳﴾

43. और नमाज़ क़ाइम रखखो और ज़कात दिया करो और रुकूअ़ करने वालों के साथ (मिल कर) रुकूअ़ किया करो।

اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَ تَنْسَوْنَ
اَنْفُسَكُمْ وَ اَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۴۴﴾

44. क्या तुम दूसरे लोगों को नेकी का हुक्म देते हो और अपने आप को भूल जाते हो हालां कि तुम (अल्लाह की) किताब भी पढ़ते हो, तो क्या तुम नहीं सोचते ?

وَ اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَ الصَّلٰوةِ ؕ وَ
اِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ﴿۴۵﴾ ۙ

45. और सब्र और नमाज़ के ज़रीए (अल्लाह से) मदद चाहो, और बेशक येह गिरां है मगर (उन) आ़जिज़ों पर (हरगिज़) नहीं (जिन के दिल महब्बते इलाही से ख़स्ता और ख़शिय्यते इलाही से शिकस्ता हैं।)

الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ
وَ اَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ﴿۴۶﴾ ع

46. (येह वोह लोग हैं) जो यक़ीन रखते हैं कि वोह अपने रब से मुलाक़ात करने वाले हैं और वोह उसी की तरफ़ लौट कर जानेवाले हैं।

يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ
الَّتِيْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَ اَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ
عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۷﴾

47. ऐ औलादे या'क़ूब ! मेरे वोह इन्आ़म याद करो जो मैं ने तुम पर किए और येह कि मैं ने तुम्हें (इस ज़माने में) सब लोगों पर फ़ज़ीलत दी।

وَ اتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ
عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّ لَا يُقْبَلُ مِنْهَا
شَفَاعَةٌ وَّ لَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّ
لَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۴۸﴾

48. और उस दिन से डरो जिस दिन कोई जान किसी दूसरे की तरफ़ से कुछ बदला न दे सकेगी और न उस की तरफ़ से (किसी ऐसे शख़्स की) कोई सिफ़ारिश क़ुबूल की जाएगी(जिसे इज़्ने इलाही हा़सिल न होगा) और न उस की तरफ़ से जान (छुड़ाने के लिए) कोई मुआ़वज़ा क़ुबूल किया जाएगा और न (अम्रे इलाही) के ख़िलाफ़ उन की इम्दाद की जा सकेगी।

وَ اِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ
يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُوْنَ
اَبْنَآءَكُمْ وَ يَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَ

49. और वोह वक़्त भी याद करो जब हम ने तुम्हें क़ौमे फ़िरऔ़न से नजात बख़्शी जो तुम्हें इन्तिहाई सख़्त अ़ज़ाब देते थे तुम्हारे बेटों को ज़ब्ह़ करते और तुम्हारी बेटियों को ज़िन्दह रखते थे, और

فِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿٤٩﴾

उस में तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से बड़ी (कड़ी) आज़माइश थी।

وَ اِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَ اَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٠﴾

50. और जब हम ने तुम्हें (बचाने कि लिए) दरिया को फाड़ दिया सो हम ने तुम्हें (इस तरह) नजात अ़ता की और (दूसरी तरफ़) हम ने तुम्हारी आंखों के सामने क़ौमे फ़िरऔ़न को ग़र्क़ कर दिया।

وَ اِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰۤى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٥١﴾

51. और (वोह वक़्त भी याद करो) जब हम ने मूसा (علیہ السلام) से चालीस रातों का वा'दा फ़रमाया था फिर तुम ने मूसा (علیہ السلام) के चिल्लए ए'तिकाफ़ में जाने के बा'द बछड़े को अपना मा'बूद बना लिया और तुम वाक़ेई बड़े ज़ालिम थे।

ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٢﴾

52. फिर हम ने उस के बा'द भी तुम्हें मुआ़फ़ कर दिया ता कि तुम शुक्रगुज़ार हो जाओ।

وَ اِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿٥٣﴾

53. और जब हम ने मूसा (علیہ السلام) को किताब और हक़्को बातिल में फ़र्क़ करनेवाला मो'जिज़ह अ़ता किया ता कि तुम राहे हिदायत पाओ।

وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْۤا اِلٰى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ ؕ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٤﴾

54. और जब मूसा (علیہ السلام) ने अपनी क़ौम से कहा, ऐ मेरी क़ौम बे शक तुम ने बछड़े को अपना मा'बूद बना कर अपनी जानों पर बड़ा ज़ुल्म किया है तो अब अपने पैदा फ़रमानेवाले (ह़क़ीक़ी रब) के हुज़ूर तौबा करो पस (आपस में) एक दूसरे को क़त्ल कर डालो (इस तरह कि जिन्हों ने बछड़े की परस्तिश नहीं की और अपने दीन पर क़ाइम रहे हैं वोह बछड़े की परस्तिश कर के दीन से फिर जाने वालों को सज़ा के तौर पर क़त्ल कर दें ।) येही (अ़मल) तुम्हारे लिए तुम्हारे ख़ालिक़ के नज़दीक बेहतरीन (तौबा) है, फिर उस ने तुम्हारी तौबा क़ुबूल फ़रमा ली, यक़ीनन वोह बड़ा ही तौबा क़ुबूल करनेवाला मेहरबान है।

وَ اِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ
حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ
الصّٰعِقَةُ وَ اَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿۵۵﴾

55. और जब तुम ने कहा, ऐ मूसा हम आप पर हरगिज़ ईमान न लाएंगे यहां तक कि हम अल्लाह को (आंखों के सामने) बिल्कुल आश्कारा देख लें पस (इस पर) तुम्हें कड़क ने आ लिया (जो तुम्हारी मौत का बाइ़स बन गई) और तुम (खुद येह मन्ज़र) देखते रहे।

ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۵۶﴾

56. फिर हम ने तुम्हारे मरने के बाद तुम्हें (दोबारा) ज़िन्दह किया ता कि तुम (हमारा) शुक्र अदा करो।

وَ ظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَ اَنْزَلْنَا
عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَ السَّلْوٰى ؕ كُلُوْا
مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَ مَا
ظَلَمُوْنَا وَ لٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُوْنَ ﴿۵۷﴾

57. और (याद करो) जब हम ने तुम पर (वादिए तीह में) बादल का साया किए रखा और हम ने तुम पर मन्नो सल्वा उतारा कि तुम हमारी अ़ता की हुई पाकीज़ह चीज़ों में से खाओ, सो उन्हों ने(ना फ़रमानी और ना शुक्री कर के) हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा मगर अपनी ही जानों पर ज़ुल्म करते रहे।

وَ اِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ
فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا
وَّ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّ قُوْلُوْا
حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَ سَنَزِيْدُ
الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۸﴾

58. और (याद करो) जब हम ने फ़रमाया : इस शहर में दाख़िल हो जाओ और इस में जहां से चाहो खूब जी भर के खाओ और येह कि शहर के दरवाज़े में सजदह करते हुए दाख़िल होना और येह केहते जाना (ऐ हमारे रब हम सब ख़ताओं की बख़्शिश चाहते हैं (तो) हम तुम्हारी गुज़िश्ता ख़ताएं मुआ़फ़ फ़रमा देंगे, और अ़लावह इस के नेकूकारों को मज़ीद लुत्फ़ो करम से नवाज़ेंगे।

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ
الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى
الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ
بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۵۹﴾ ع

59. फिर उन ज़ालिमों ने उस क़ौल को जो उन से कहा गया था एक और कलिमे से बदल डाला सो हम ने (उन) ज़ालिमों पर आस्मान से (बसूरते ताऊ़न) सख़्त आफ़त उतार दी इस वजह से कि वोह (मुसल्सल) हुक्म अ़दूली कर रहे थे।

وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا
اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ
مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ
كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا
مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ
مُفْسِدِيْنَ ﴿٦٠﴾

60. और (वोह वक़्त भी याद करो) जब मूसा (علیہ السلام) ने अपनी क़ौम के लिए पानी मांगा तो हम ने फ़रमाया : अपना अ़सा उस पथ्थर पर मारो, फिर उस (पथ्थर) से बारह चश्मे फूट पड़े, वाक़िअ़तन हर गिरोहने अपना अपना घाट पेहचान लिया, (हम ने फ़रमाया) अल्लाह के (अ़ता कर्दह) रिज़्क़ में से खाओ और पियो लेकिन ज़मीन में फ़साद अंगेज़ी न करते फिरो।

وَ اِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى
طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ
لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَ
قِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ؕ
قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِىْ هُوَ اَدْنٰى
بِالَّذِىْ هُوَ خَيْرٌ ؕ اِهْبِطُوْا مِصْرًا
فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ ؕ وَ ضُرِبَتْ
عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ ۗ وَ بَآءُوْ
بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا
يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَ يَقْتُلُوْنَ
النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا
عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٦١﴾ ع ۷

61. और जब तुम ने कहा ऐ मूसा ! हम फ़क़त एक खाने (या'नी मन्नो सल्वा) पर हरगिज़ सब्र नहीं कर सक्ते तो आप अपने रब से (हमारे हक़ में) दुआ कीजिए कि वोह हमारे लिए ज़मीन से उगने वाली चीज़ों में से साग और ककड़ी और गेहूं और मसूर और प्याज़ पैदा कर दे, (मूसा علیہ السلام ने अपनी क़ौम से) फ़रमाया : क्या तुम उस चीज़ को जो अदना है बेहतर चीज़ के बदले मांगते हो?(अगर तुम्हारी येही ख़्वाहिश है तो) किसी भी शहर में जा उतरो यक़ीनन (वहां) तुम्हारे लिए वोह कुछ (मुयस्सर) होगा जो तुम मांगते हो, और उन पर ज़िल्लत और मोहताजी मुसल्लत कर दी गई, और वोह अल्लाह के ग़ज़ब में लौट गए, येह इस वजह से (हुवा) कि वोह अल्लाह की आयतों का इन्कार किया करते और अंबियाअ को ना हक़ क़त्ल करते थे, और येह इस वजह से भी हुवा कि वोह ना फ़रमानी किया करते और (हमेशा) हद से बढ़ जाते थे।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ الَّذِيْنَ هَادُوْا
وَالنَّصٰرٰى وَ الصّٰبِـُٔوْنَ مَنْ اٰمَنَ

62. बेशक जो लोग ईमान लाए और जो यहूदी हुए और (जो) नसारा और साबी (थे उन में से) जो (भी) अल्लाह

بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا
فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾

पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाया और उसने अच्छे अ़मल किए, तो उन के लिए उन के रब के हां उन का अज्र है, उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह रंजीदह होंगे।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا
فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ
بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾

63. और (याद करो) जब हम ने तुम से पुख़्ता अ़हद लिया और तुम्हारे ऊपर तूर को उठा खड़ा किया, कि जो कुछ हम ने तुम्हें दिया है उसे मज़बूती से पकड़े रहो और जो कुछ उस किताब तौरात) में (लिखा) है उसे याद रखो ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ।

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ فَلَوْ
لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ
لَكُنْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٤﴾

64. फिर इस (अ़हद और तंबीह) के बाद भी तुम ने रू गर्दानी की, पस अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की रह़्मत न होती तो तुम यक़ीनन तबाह हो जाते।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِيْنَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ
فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً
خٰسِئِيْنَ ﴿٦٥﴾ ۚ

65. और (ऐ यहूद !) तुम यक़ीनन उन लोगों से ख़ूब वाक़िफ़ हो जिन्हों ने तुम में से हफ़्ते के दिन (के अह़्काम के बारे में) सर कशी की थी तो हम ने उन से फ़रमाया कि तुम धुत्कारे हुए बन्दर बन जाओ।

فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا
خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٦﴾

66. पस हम ने इस (वाक़िए़) को उस ज़माने और उस के बा'द वाले लोगों के लिए (बाइ़से) इ़ब्रत और परहेज़गारों के लिए (मूजिबे) नसीह़त बना दिया।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖٓ اِنَّ اللّٰهَ
يَاْمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَةً ؕ قَالُوْٓا
اَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ؕ قَالَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ
اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٦٧﴾

67. और (वोह वाक़िआ़ भी याद करो) जब मूसा (علیہ السلام) ने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि एक गाय ज़बह़ करो, (तो) वोह बोले क्या आप हमें मस्ख़रा बनाते हैं ? मूसा (علیہ السلام) ने फ़रमाया : अल्लाह की पनाह मांगता हूं (इस से कि मैं जाहिलों में से हो जाऊं)

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا

68. (तब) उन्हों ने कहा : आप हमारे लिए अपने रब से दुआ़ करें कि वोह हम पर वाज़ेह़ कर दे कि (वोह) गाय

هِيَ ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ
لَّا فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ ؕ عَوَانٌۢ بَيْنَ
ذٰلِكَ ؕ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٨﴾

कैसी हो ? (मूसा ﷺ ने) कहा : बे शक वोह फ़रमाता है कि वोह गाय न तो बूढ़ी हो और न बिल्कुल कम उ़म्र (अवसर), बल्कि दरमियानी उ़म्र की (रास) हो, पस अब ता'मील करो जिस का तुम्हें हुक्म दिया गया है।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا
لَوْنُهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا
بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ
النّٰظِرِيْنَ ﴿٦٩﴾

69. वोह (फिर) बोले : अपने रब से हमारे ह़क़ में दुआ़ करें वोह हमारे लिए वाज़ेह़ कर दे कि उस का रंग कैसा हो? (मूसा ﷺ ने) कहा : वोह फ़रमाता है कि वोह गाय ज़र्द रंग की हो, उस की रंगत ख़ूब गेहरी हो (ऐसी जाज़िब नज़र हो कि) देखने वालों को बहुत भली लगे।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا
هِيَ ۙ اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا ؕ
وَاِنَّآ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٧٠﴾

70. अब उन्हों ने कहा : आप हमारे लिए अपने रब से दरख़ास्त कीजिए कि वोह हम पर वाज़ेह़ फ़रमा दे कि वोह कौन सी गाय है ? (क्यूं कि) हम पर गाय मुश्तबह हो गई है, और यक़ीनन अगर अल्लाह ने चाहा तो हम ज़रूर हिदायत याफ़्ता हो जाएंगे।

قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا
ذَلُوْلٌ تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِى
الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ لَّا شِيَةَ فِيْهَا ؕ
قَالُوا الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ؕ فَذَبَحُوْهَا
وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧١﴾ ع ٨

71. मूसा (ﷺ ने कहा) अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है (वोह कोई घटिया गाय नहीं बल्कि) यक़ीनी तौर पर ऐसी आ'ला गाय हो जिस से न ज़मीन में हल चलाने की मेह़नत ली जाती हो और न खेती को पानी देती हो, बिल्कुल तन्दुरुस्त हो उस में कोई दाग़ धब्बा भी न हो, उन्हों ने कहा : अब आप ठीक बात लाए (हैं), फिर उन्हों ने उस को ज़बह़ किया हालां कि वोह ज़बह़ करते मा'लूम न होते थे।

وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا ؕ
وَاللّٰهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ﴿٧٢﴾ ج

72. और जब तुम ने एक शख़्स को क़त्ल कर दिया फिर तुम आपस में उस (के इल्ज़ाम) में झगड़ने लगे और अल्लाह (वोह बात) ज़ाहिर फ़रमाने वाला था जिसे तुम छुपा रहे थे।

فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ؕ كَذٰلِكَ
يُحْىِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى ۙ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ

73. फिर हम ने हुक्म दिया कि उस (मुर्दह) पर इस (गाय) का एक टुकड़ा मारो, इसी तरह़ अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दह फ़रमाता है । (या क़ियामत के दिन मुर्दों को

لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٣﴾

ज़िन्दह करेगा) और तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है ता कि तुम अ़क़्लो शऊ़र से काम लो।

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ؕ وَاِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٤﴾

74. फिर उस के बा'द भी) तुम्हारे दिल सख़्त हो गए चुनांचे वोह (सख़्ती में) पथ्थरों जैसे (हो गए) हैं या उन से भी ज़ियादह सख़्त(हो चुके हैं, इस लिए कि) बे शक पथ्थरों में (तो) बा'ज़ ऐसे भी हैं जिन से नेहरें फूट निकल्ती हैं, और यक़ीनन उन में से बा'ज़ वोह (पथ्थर) भी हैं जो फट जाते हैं तो उन में से पानी उबल पड़ता है, और बेशक उन में से बा'ज़ ऐसे भी हैं जो अल्लाह के ख़ौफ़ से गिर पड़ते हैं, (अफ़्सोस तुम्हारे दिलों में इस क़दर नरमी, ख़स्तगी और शिकस्तगी भी नहीं रही) और अल्लाह तुम्हारे कामों से बे ख़बर नहीं।

اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٥﴾

75. (ऐ मुसल्मानो) क्या तुम येह त-वक़्क़ो' रखते हो कि वोह (यहूदी) तुम पर यक़ीन कर लेंगे जब कि उनमें से एक गिरोह के लोग ऐसे (भी) थे कि अल्लाह का कलाम (तौरात) सुनते फिर उसे समझने के बा'द (ख़ुद) बदल देते हालांकि वोह ख़ूब जानते थे (कि ह़क़ीक़त क्या है और वोह क्या कर रहे हैं)

وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚۖ وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْٓا اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٧٦﴾

76. और(उन का ह़ाल तो येह हो चुका है कि) जब अेह्ले ईमान से मिलते हैं (तो) केहते हैं हम (भी तुम्हारी तरह़ ह़ज़रत मुह़म्मद ﷺ पर) ईमान ले आए हैं और जब आपस में एक दूसरे के साथ तन्हाई में होते हैं (तो) केहते हैं क्या तुम उन (मुसल्मानों) से (नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां ﷺ की रिसालत और शान के बारे में) वोह बातें बयान कर देते हो जो अल्लाह ने तुम पर (तौरात के ज़रीए़) ज़ाहिर की हैं ता कि उस से वोह तुम्हारे रब के हुज़ूर तुम्हीं पर हुज्जत क़ाइम करें, क्या तुम (इत्नी) अ़क़्ल (भी) नहीं रखते ?

أَوَ لَا يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٧﴾

77. क्या वोह नहीं जानते कि अल्लाह को वोह सब कुछ मा'लूम है जो वोह छुपाते हैं और जो ज़ाहिर करते हैं।

وَمِنْهُمْ اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ اِلَّاۤ اَمَانِيَّ وَ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿٧٨﴾

النصف

78. और उन (यहूद) में से बा'ज़) अनपढ़ (भी) हैं जिन्हें (सिवाए सुनी सुनाई झूटी उम्मीदों के) किताब (के मा'नी व मफ़्हूम) का कोई इल्म ही नहीं वोह (किताब को) सिर्फ़ ज़बानी पढ़ना जानते हैं येह लोग महज़ वह्मो गुमान में पड़े रेहते हैं।

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِاَيْدِيْهِمْ ۗ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ وَ وَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ ﴿٧٩﴾

79. पस ऐसे लोगों के लिए बड़ी ख़राबी है जो अपने ही हाथों से किताब लिखते हैं, फिर केहते हैं कि येह अल्लाह की तरफ़ से है ता कि उस के इवज़ थोड़े से दाम कमा लें, सो उन के लिए उस (किताब की वजह से) हलाकत है जो उन के हाथों ने तेह्रीर की और उस मुआवज़े की वजह) से तबाही है जो वोह कमा रहे हैं।

وَ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّاۤ اَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً ؕ قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗۤ اَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٠﴾

80. और वोह यहूद येह भी केहते हैं कि हमें दोज़ख़ की आग हरगिज़ नहीं छुएगी सिवाए गिन्ती के चन्द दिनों के, (ज़रा) आप (उन से) पूछें क्या तुम अल्लाह से कोई (ऐसा) वा'दा ले चुके हो? फिर तो वोह अपने वा'दे के ख़िलाफ़ हरगिज़ न करेगा या तुम अल्लाह पर यूं ही (वोह) बोहतान बांधते हो जो तुम ख़ुद भी नहीं जानते।

بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّ اَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓـَٔتُهٗ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨١﴾

81. हां वाक़ई जिस ने बुराई इख़्तियार की और उस के गुनाहों ने उस को हर तरफ़ से घेर लिया तो वोही लोग दोज़ख़ी हैं, वोह उस में हमेशा रेहनेवाले हैं।

وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

82. और जो लोग ईमान लाए और (उन्हों ने) नेक अमल

الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ
هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٨٢﴾
وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ ۣ وَبِالْوَالِدَيْنِ
اِحْسَانًا وَّ ذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى
وَالْمَسٰكِيْنِ وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا
وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۭ ثُمَّ
تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ
مُّعْرِضُوْنَ ﴿٨٣﴾
وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا
تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ
اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ
وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ﴿٨٤﴾
ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ
وَتُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ
دِيَارِهِمْ ۡ تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ
وَالْعُدْوَانِ ۭ وَاِنْ يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى
تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ
اِخْرَاجُهُمْ ۭ اَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ
الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ۚ فَمَا

किए तो वोही लोग जन्नती हैं, वोह उस में हमेशा रेहने वाले हैं।

83. और (याद करो) जब हम ने अवलादे या'क़ूब से पुख़्ता वा'दा लिया कि अल्लाह के सिवा (किसी और की) इबादत न करना, और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करना और क़राबतदारों और यतीमों और मोहताजों के साथ भी (भलाई करना) और आ़म लोगों से (भी नरमी और खुश खुल्क़ी के साथ) नेकी की बात केहना और नमाज़ क़ाइम रखना और ज़कात देते रेहना, फिर तुम में से चन्द लोगों के सिवा सारे(इस अ़हद से) रू गर्दां हो गए और तुम (ह़क़ से) गुरेज़ ही करनेवाले हो।

84. और जब हमने तुम से (येह) पुख़्ता अ़हद(भी) लिया कि तुम (आपस में) एक दूसरे का खून नहीं बहाओगे और न अपने लोगों को (अपने घरों और बस्तियों से निकाल कर) जिला वतन करोगे फिर तुम ने (इस अम्र का) इक़रार कर लिया और तुम (उस की) गवाही (भी) देते हो।

85. फिर तुम ही वोह लोग हो कि अपनों को क़त्ल कर रहे हो और अपने ही एक गिरोह को उन के वतन से बाहर निकाल रहे हो और (मुस्तज़ाद येह कि) उन के ख़िलाफ़ गुनाह और ज़ियादती के साथ (उन के दुश्मनों की) मदद भी करते हो और अगर वोह क़ैदी हो कर तुम्हारे पास आ जाएं तो उन का फ़िद्या दे कर छुड़ा लेते हो (ता कि वोह तुम्हारे एह्सान मन्द रहें) हालांकि उन का वतन से निकाला जाना भी तुम पर ह़राम कर दिया गया था, क्या तुम किताब के बा'ज़ हिस्सों पर ईमान रखते हो और बा'ज़ का इन्कार करते हो? पस तुम में से जो शख़्स ऐसा

جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اِلَّا
خِزْيٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ ؕ
وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۸۵﴾
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ
الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۖ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ
الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۸۶﴾ ع ۱۰
وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ قَفَّيْنَا
مِنْۢ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ۖ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى
ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ
الْقُدُسِ ؕ اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا
لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ فَفَرِيْقًا
كَذَّبْتُمْ ۖ وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ﴿۸۷﴾
وَ قَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ لَّعَنَهُمُ
اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا
يُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾
وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ
مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَكَانُوْا مِنْ
قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا

करे उस की क्या सज़ा हो सक्ती है? सिवाए इस के कि दुन्या की ज़िन्दगी में ज़िल्लत (और रुस्वाई) हो, और क़ियामत के दिन (भी ऐसे लोग) सख़्त तरीन अ़ज़ाब की तरफ़ लौटाए जाएंगे, और अल्लाह तुम्हारे कामों से बे ख़बर नहीं।

86. येही वोह लोग हैं जिन्हों ने आख़िरत के बदले में दुन्या की ज़िन्दगी ख़रीद ली है, पस न उन पर से अ़ज़ाब हल्का किया जाएगा और न ही उन को मदद दी जाएगी।

87. और बेशक हम ने मूसा (عليه السلام) को किताब(तौरात) अ़ता की और उन के बा'द हम ने पय दर पय (बहुत से) पयग़म्बर भेजे, और हम ने मरयम (عليها السلام) के फ़रज़न्द ईसा (عليه السلام) को (भी) रौशन निशानियां अ़ता कीं और हम ने पाक रूह़ के ज़रीए़ उन की ताईद (और मदद) की, तो क्या (हुवा) जब भी कोई पयग़म्बर तुम्हारे पास वोह (अह़्काम) लाया जिन्हें तुम्हारे नफ़्स पसन्द नहीं करते थे तो तुम (वहीं) अकड़ गए और बा'ज़ों को तुम ने झुटलाया और बा'ज़ों को तुम क़त्ल करने लगे।

88. और यहूदियों ने कहा : हमारे दिलों पर ग़िलाफ़ हैं, (ऐसा नहीं) बल्कि उन के कुफ़्र के बाइ़स अल्लाह ने उन पर ला'नत कर दी है सो वोह बहुत ही कम ईमान रखते हैं।

89. और जब उनके पास अल्लाह की तरफ़ से वोह किताब (क़ुर्आन) आई जो उस किताब (तौरात) की (अस्लन) तस्दीक़ करनेवाली है जो उन के पास मौजूद थी, हालांकि इस से पहले वोह खुद (नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां ह़ज़रत मुह़म्मद ﷺ और उन पर उतरने वाली किताब क़ुर्आन'' के वसीले से) काफ़िरों पर

كَفَرُوْا بِهٖ ۚ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾

फ़तेहयाबी (की दुआ़) मांगते थे, सो जब उनके पास वोही नबी (ह़ज़रत मुह़म्मद ﷺ अपने ऊपर नाज़िल होने वाली किताब क़ुरआन के साथ) तशरीफ़ ले आया जिसे वोह (पहले ही से) पेहचानते थे तो उसी के मुन्किर हो गए, पस (ऐसे दानिस्ता) इन्कार करने वालों पर अल्लाह की ला'नत है।

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۚ فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٩٠﴾

90. उन्हों ने अपनी जानों का क्या बुरा सौदा किया कि अल्लाह की नाज़िल कर्दह किताब का इन्कार कर रहे हैं, महज़ इस ह़सद में कि अल्लाह अपने फज़्ल से अपने बन्दों में जिस पर चाहता है (वही) नाज़िल फ़रमाता है, पस वोह ग़ज़ब दर ग़ज़ब के सज़ावार हुए, और काफ़िरों के लिए ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब है।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۗ وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ؕ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ اَنْۢبِيَآءَ اللّٰهِ مِنْ قَبْلُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩١﴾

91. और जब उन से कहा जाता है इस (किताब) पर ईमान लाओ जिसे अल्लाह ने (अब) नाज़िल फ़रमाया है (तो) केहते हैं : हम सिर्फ़ उस किताब पर ईमान रखते हैं जो हम पर नाज़िल की गई, और वोह इस के अ़लावा का इन्कार करते हैं, हालांकि वोह (क़ुर्आन भी) ह़क़ है (और) उस (किताब)की (भी) तस्दीक़ करता है जो उन के पास है, आप (उन से) दर्याफ़्त फ़रमाएं कि फिर तुम इस से पहले अंबिया को क्यों क़त्ल करते रहे हो अगर तुम वाक़ेई अपनी ही किताब पर) ईमान रखते थे।

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٩٢﴾

92. और (सूरते ह़ाल येह है कि) तुम्हारे पास (ख़ुद) मूसा (عليه السلام) खुली निशानियां लाए फिर तुम ने उन के पीछे बछड़े को मा'बूद बना लिया और तुम (ह़क़ीक़त में) हो ही जफ़ाकार।

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا

93. और जब हम ने तुम से पुख़्ता अ़हद लिया और हम

فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ
بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ؕ قَالُوْا سَمِعْنَا وَ
عَصَيْنَا ۗ وَ اُشْرِبُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ
الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ؕ قُلْ بِئْسَمَا
يَاْمُرُكُمْ بِهٖۤ اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۹۳﴾

ने तुम्हारे ऊपर तूर को उठा खड़ा किया (येह फ़रमा कर कि) इस किताब को मज़बूती से थामे रखो जो हम ने तुम्हें अ़ता की है और (हमारा हुक्म) सुनो, तो (तुम्हारे बड़ों ने) कहा : हम ने सुन लिया मगर माना नहीं, और उन के दिलों में उन के कुफ़्र के बाइ़स बछड़े की महब्बत रचा दी गई थी, (ऐ महबूब ! उन्हें) बता दें येह बातें बहुत (ही) बुरी हैं जिन का हुक्म तुम्हें तुम्हारा (नाम निहाद) ईमान दे रहा है अगर (तुम वाक़िअ़तन उन पर) ईमान रखते हो।

قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ
عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ
فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۹۴﴾

94. आप फ़रमा दें: अगर आख़िरत का घर अल्लाह के नज़दीक सिर्फ़ तुम्हारे लिए ही मख़्सूस है और लोगों के लिए नहीं तो तुम (बे धड़क) मौत की आरज़ू करो अगर तुम (अपने ख़याल में) सच्चे हो।

وَ لَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ
اَيْدِيْهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿۹۵﴾

95. वोह हरगिज़ कभी भी इस की आरज़ू नहीं करेंगे उन गुनाहों और मज़ालिम के बाइ़स जो उन के हाथ आगे भेज चुके हैं (या पहले कर चुके है) और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है।

وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى
حَيٰوةٍ ۛۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۛۚ يَوَدُّ
اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ وَمَا
هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ
يُّعَمَّرَ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿۹۶﴾ ع

96. आप उन्हें यक़ीनन सब लोगों से ज़ियादह जीने की हवस में मुब्तिला पाएंगे और (यहां तक कि) मुश्रिकों से भी ज़ियादह, उनमें से हर एक चाहता है कि काश उसे हज़ार बरस की उम्र मिल जाए, अगर उस इतनी उम्र मिल भी जाए, तो भी येह उसे अ़ज़ाब से बचानेवाली नहीं हो सक्ती, और अल्लाह उन के आ'माल को ख़ूब देख रहा है।

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ
نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَ هُدًى

97. आप फ़रमा दें जो शख़्स जिब्रील का दुश्मन है (वोह ज़ुल्म कर रहा है) क्यों कि उस ने (तो) उस (क़ुरआन) को आप के दिल पर अल्लाह के हुक्म से उतारा है। (जो) अपने से पहले (की किताबों) की तस्दीक़ करनेवाला है और

وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٧﴾

मोमिनों के लिए (सरासर) हिदायत और ख़ुशख़बरी है।

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٩٨﴾

98. जो शख़्स अल्लाह का और उस के फ़रिश्तों और उस के रसूलों का और जिब्रील और मीकाईल का दुश्मन हुवा तो यक़ीनन अल्लाह (भी उन) काफ़िरों का दुश्मन है।

وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۚ وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿٩٩﴾

99. और बेशक हम ने आप की तरफ़ रौशन आयतें उतारी हैं और (उन) निशानियों का सिवाए ना फरमानों के कोई इन्कार नहीं कर सक्ता।

اَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٠﴾

100. और क्या (ऐसा नहीं कि) जब भी उन्हों ने कोई अ़हद किया तो उन में से एक गिरोह ने उसे तोड़ कर फेंक दिया, बल्कि उन में से अक्सर ईमान ही नहीं रखते।

وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۘ كِتٰبَ اللّٰهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾

101. और (इसी तरह) जब उन के पास अल्लाह की जानिब से रसूल (ह़ज़रत मुह़म्मद ﷺ) आए जो उस किताब की (अस्लन) तस्दीक करने वाले हैं जो उन के पास (पहले से मौजूद थी तो (इन्ही) एहले किताब में से एक गिरोह ने अल्लाह की (इसी)किताब (तौरात) को पसे पुश्त फेंक दिया, गोया वोह (उस को) जानते ही नहीं (हालांकि इसी तौरात ने उन्हें नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां ह़ज़रत मुह़म्मद ﷺ की तश्रीफ आवरी की ख़बर दी थी।)

وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ۗ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ؕ وَمَا

102. और वोह (यहूद तो) उस चीज़ या'नी जादू के पीछे भी लग गए थे जो सुलैमान (علیہ السلام) के अ़ह्दे हुकूमत में शयातीन पढ़ा करते थे हालां कि सुलैमान (علیہ السلام) ने (कोई) कुफ़्र नहीं किया बल्कि कुफ़्र तो शैतानों ने किया जो लोगों को जादू सिखाते थे और उस (जादू के इ़ल्म) के पीछे (भी) लग गए जो शहर बाबुल में हारूत और मारूत (नामी) दो फ़रिश्तों पर उतारा गया था। वोह दोनों किसी

يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَاۤ اِنَّمَا
نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ؕ فَيَتَعَلَّمُوْنَ
مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ
وَزَوْجِهٖ ؕ وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ
اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا
يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ؕ وَلَقَدْ عَلِمُوْا
لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ
خَلَاقٍ ۗ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖۤ
اَنْفُسَهُمْ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۲﴾

को कुछ न सिखाते थो यहां तक कि केह देते कि हम तो महज़ आज़माइश (के लिए) हैं सो तुम(इस पर ए'तिकाद रख कर) काफ़िर न बनो, इस के बा वजूद वोह (यहूदी) उन दोनों से ऐसा (मंतर) सीखते थे जिस के ज़रीए शौहर और उस की बीवी के दरमियान जुदाई डाल देते, ह़ालां कि वोह उस के ज़रीए किसी को भी नुक़्सान नहीं पहुंचा सक्ते मगर अल्लाह ही के हुक्म से और येह लोग वोही चीज़ें सीखते हैं जो उन के लिए ज़रर रसां हैं और उन्हें नफ़ा' नहीं पहुंचातीं और उन्हें (येह भी) यक़ीनन मा'लूम था कि जो कोई इस (कुफ़्र या जादू टोने) का ख़रीदार बना उस के लिए आख़िरत में कोई ह़िस्सा नहीं होगा, और वोह बहुत ही बुरी चीज़ है जिस के बदले में उन्हों ने अपनी जानों (की ह़क़ीक़ी बेहतरी या'नी उख़रवी फ़लाह़) को बेच डाला, काश वोह इस (सौदे की ह़क़ीक़त) को जानते।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ
مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ؕ لَوْ كَانُوْا
يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۳﴾ ع ۱۲ ۱۲

103. और आगर वोह ईमान ले आते और परहेज़गारी इख़्तियार करते तो अल्लाह की बारगाह से (थोड़ा सा) सवाब (भी इन सब चीज़ों से) कहीं बेहतर होता, काश वोह (इस राज़ से) आगाह होते।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا
رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ؕ
وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۰۴﴾
مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ
الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يُّنَزَّلَ
عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ

104. ऐ ईमानवालो ! (नबिय्ये अकरम ﷺ को अपनी तरफ़ मु-त-वज्जेह करने के लिए) राइना मत कहा करो बल्कि (अदब से) उन्ज़ुरना (हमारी तरफ़ नज़रे करम फ़रमाइये) कहा करो और (उन का इर्शाद) बग़ौर सुनते रहा करो, और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है।

105. न वोह लोग जो अह्ले किताब में से काफ़िर हो गए और न ही मुश्रिकीन इसे पसन्द करते हैं कि तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर कोई भलाई उतरे, और अल्लाह जिसे

يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ
وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿١٠٥﴾

चाहता है अपनी रह़मत के साथ ख़ास कर लेता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्लवाला है।

مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ
بِخَيْرٍ مِّنْهَآ اَوْ مِثْلِهَا ؕ اَلَمْ تَعْلَمْ
اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٠٦﴾

106. हम जब कोई आयत मन्सूख़ कर देते हैं या उसे फ़रामोश करा देते हैं (तो बहर सूरत) उस से बेहतर या वैसी ही (कोई और आयत) ले आते हैं, क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह हर चीज़ पर (कामिल) क़ुदरत रखता है।

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١٠٧﴾

107. क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत अल्लाह ही के लिए है, और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई दोस्त है और न ही मददगार।

اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْـَٔلُوْا رَسُوْلَكُمْ
كَمَا سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ؕ وَمَنْ
يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ
ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٠٨﴾

108. (ऐ मुसल्मानो !) क्या तुम चाहते हो कि तुम भी अपने रसूल (ﷺ) से उसी तरह़ सवालात करो जैसा कि इस से पह़ले मूसा (عليه السلام) से सवाल किए गए थे तो जो कोई ईमान के बदले कुफ़्र ह़ासिल करे पस वोह वाक़ि-अ़-तन सीधे रास्ते से भटक गया।

وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ
يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا ۚ
حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ
مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ فَاعْفُوْا
وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِىَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٠٩﴾

109. बहुत से अह्ले किताब की येह ख़्वाहिश है तुम्हारे ईमान ले आने के बा'द फिर तुम्हे कुफ़्र की तरफ़ लौटा दें, इस ह़सद के बाइ़स जो उन के दिलों में है इस के बा वजूद कि उन पर ह़क़ ख़ूब ज़ाहिर हो चुका है सो तुम दरगुज़र करते रहो और नज़र अंदाज़ करते रहो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म भेज दे, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर (कामिल) क़ुदरत रखता है।

وَ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ
وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ

110. और नमाज़ क़ाइम (किया) करो और ज़कात देते रहा करो, और तुम अपने लिए जो नेकी भी आगे भेजोगे

الفاتحة

تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١١٠﴾

उसे अल्लाह के हुज़ूर पा लोगे, जो कुछ तुम कर रहे हो यक़ीनन अल्लाह उसे देख रहा है।

وَقَالُوْا لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا مَنْ
كَانَ هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ تِلْكَ
اَمَانِيُّهُمْ ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ
كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١١١﴾

111. और अह्ले किताब केहते हैं कि जन्नत में हरगिज़ कोई भी दाख़िल नहीं होगा सिवाए इस के कि वोह यहूदी हो या नसरानी, येह उन की बातिल उम्मीदें हैं, आप फ़रमा दें कि अगर तुम (अपने दा'वे में सच्चे हो तो अपनी (इस ख़्वाहिश पर) सनद लाओ।

بَلٰى ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَ هُوَ
مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۪ وَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١١٢﴾ ع ١٣ ٩ ١٣

112. हां, जिस ने अपना चेहरा अल्लाह के लिए झुका दिया (या'नी खुद को अल्लाह के सुपुर्द कर दिया) और वोह साहिबे एह्सान हो गया तो उस के लिए उस का अज्र उस के रब के हां है और ऐसे लोगों पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वोह रंजीदह होंगे।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى
عَلٰى شَیْءٍ ۪ وَّ قَالَتِ النَّصٰرٰى
لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَیْءٍ ۙ وَّهُمْ
يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ
الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ
فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١١٣﴾

113. और यहूद केहते हैं कि नसरानियों कि बुनियाद किसी शय (या'नी सहीह़ अ़क़ीदे) पर नहीं और नसरानी केहते हैं कि यहूदियों की बुनियाद किसी शय पर नहीं, हालां कि वोह (सब अल्लाह की नाज़िल कर्दह) किताब पढ़ते हैं, इसी तरह़ वोह (मुश्रिक) लोग जिन के पास (सिरे से कोई आस्मानी) इल्म ही नहीं वोह भी इन्ही जैसी बात करते हैं, पस अल्लाह उन के दरमियान क़ियामत के दिन इस मुआ़मले में (खुद ही) फ़ैसला फ़रमा देगा जिस में वोह इख़्तिलाफ़ करते रेहते हैं।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ
اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ
خَرَابِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ
يَّدْخُلُوْهَاۤ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ؕ لَهُمْ فِي

114. और उस शख़्स से बढ़ कर कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह की मस्जिदों में उसके नामका ज़िक्र किए जाने से रोक दे और उन्हें वीरान करने की कोशिश करे, उन्हें ऐसा करना मुनासिब न था कि मस्जिदों में दाख़िल होते मगर डरते हुए, उन के लिए

الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١١٤﴾

दुनिया में (भी) ज़िल्लत है और उनके लिए आख़िरत में (भी) बड़ा अ़ज़ाब है।

وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿١١٥﴾

115. और मशरिक़ो मग़्रिब (सब) अल्लाह ही का है, पस तुम जिधर भी रुख़ करो उधर ही अल्लाह की त-वज्जोह है (या'नी हर सम्त ही अल्लाह की ज़ात जल्वहगर है), बेशक अल्लाह बड़ी वुस्अ़तवाला सब कुछ जाननेवाला है।

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿١١٦﴾

116. और वोह केहते हैं अल्लाह ने अपने लिए औलाद बनाई है, हालां कि वोह (इस से)पाक है, बल्कि जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है (सब) उसी की (ख़ल्क़ और मिल्क) है, (और) सब के सब उस के फ़रमां बर्दार हैं।

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿١١٧﴾

117. वोही आस्मानों और ज़मीन को वजूद में लाने वाला है, और जब किसी चीज़ (के ईजाद) का फैसला फ़रमा लेता है तो फिर उस को सिर्फ़ येही फ़रमाता है कि "तू हो जा" पस वोह हो जाती है।

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿١١٨﴾

118. और जो लोग इ़ल्म नहीं रखते केहते हैं कि अल्लाह हम से कलाम क्यों नहीं फ़रमाता या हमारे पास (बराहे रास्त) कोई निशानी क्यों नहीं आती? इसी तरह़ उन से पेहले लोगों ने भी उन्ही जैसी बात कही थी, उन (सब) लोगों के दिल आपस में एक जैसे हैं, बेशक हम ने यक़ीनवालों के लिए निशानियां खूब वाज़ेह़ कर दी हैं।

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْـَٔلُ عَنْ اَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ ﴿١١٩﴾

119. (ऐ मह़्बूबे मुकर्रम !) बे शक हम ने आप को हक़ के साथ खुश ख़बरी सुनानेवाला और डर सुनानेवाला बना कर भेजा है और अह्ले दोज़ख़ के बारे में आप से पुर्सिश नहीं की जाएगी।

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا

120. और यहूदो नसारा आप से (उस वक़्त तक)

النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ قُلْ
اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَلَئِنِ
اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِىْ
جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ
مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۱۲۰﴾

हरगिज़ ख़ुश नहीं होंगे जब तक आप उन के मज़हब की पैरवी इख़्तियार न कर लें, आप फ़रमा दें कि बे शक अल्लाह की (अ़ता कर्दह) हिदायत ही (ह़क़ीक़ी) हिदायत है, (उम्मत की ता'लीम के लिए फ़रमाया) और अगर (ब फ़र्ज़े मुह़ाल) आप ने इस इ़ल्म के बा'द जो आप के पास (अल्लाह की तरफ़ से) आ चुका है, उन की ख़्वाहिशात की पैरवी की तो आप के लिए अल्लाह से बचानेवाला न कोई दोस्त होगा और न कोई मददगार।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ
حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ
بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۲۱﴾ ع ۱۴

121. (ऐसे लोग भी हैं) जिन्हें हमने किताब दी वोह उसे इस तरह़ पढ़ते हैं जैसे पढ़ने का ह़क़ है, वोही लोग इस (किताब) पर ईमान रखते हैं, और जो इस का इन्कार कर रहे हैं सो वोही लोग नुक़्सान उठानेवाले हैं।

يٰبَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ
الَّتِىْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّىْ فَضَّلْتُكُمْ
عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۲۲﴾

122. ऐ औलादे या'क़ूब ! मेरी उस ने'मत को याद करो जो मैं ने तुम पर अरज़ानी फ़रमाई और (ख़ुसूसन) येह कि मैं ने तुम्हें उस ज़माने के तमाम लोगों पर फ़ज़ीलत अ़ता की।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِىْ نَفْسٌ
عَنْ نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا
عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ
يُنْصَرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾

123. और उस दिन से डरो जब कोई जान किसी दूसरी जान की जगह कोई बदला न दे सकेगी और न उस की तरफ़ से (अपने आप को छुड़ाने के लिए) कोई मुआ़वज़ा क़ुबूल किया जाएगा और न उसको (इज़्ने इलाही के बिग़ैर) कोई सिफ़ारिश ही फ़ाइदह पहुंचा सकेगी और न (अम्रे इलाही के ख़िलाफ़) उन्हें कोई मदद दी जा सकेगी।

وَاِذِ ابْتَلٰٓى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ
فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّىْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ
اِمَامًا ؕ قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِىْ ؕ قَالَ

124. और (वोह वक़्त याद करो) जब इब्राहीम (علیہ السلام) को उन के रब ने कई बातों में आज़माया तो उन्हों ने वोह पूरी कर दीं, (इस पर) अल्लाह ने फ़रमाया : मैं तुम्हें लोगों का पेश्वा बनाऊंगा, उन्हों ने अ़र्ज़ किया : (क्या) मेरी

لَا يَنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٢٤﴾

औलाद में से भी? इर्शाद हुवा (हां मगर) मेरा वा'दह ज़ालिमों को नहीं पहुंचता।

وَ اِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَ اَمْنًا ؕ وَ اتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ وَ عَهِدْنَاۤ اِلٰۤى اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِىَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَ الْعٰكِفِيْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿١٢٥﴾

125. और (याद करो) जब हम ने इस घर (ख़ानए का'बा) को लोगों के लिए रुजूअ़ (और इज्तिमाअ़) का मर्कज़ और जाए अमान बना दिया, और (हुक्म दिया कि) इब्राहीम (عليه السلام) के खड़े होने की जगह को मक़ामे नमाज़ बना लो, और हम ने इब्राहीम और इस्माईल (عليهما السلام) को ताकीद फ़रमाई कि मेरे घर को तवाफ़ करने वालों और ऐ'तिकाफ़ करने वालों और रुकूअ़ो सुजूद करने वालों के लिए पाक (साफ़) कर दो।

وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّ ارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٢٦﴾

126. और जब इब्राहीम (عليه السلام) ने अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! इसे अम्नवाला शहर बना दे और इस के बाशिन्दों को तरह तरह के फलों से नवाज़ (या'नी) उन लोगों को जो उन में से अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान लाए, (अल्लाह ने) फ़रमाया और जो कोई कुफ़्र करेगा उस को भी ज़िन्दगी की थोड़ी मुद्दत के लिए फाइदह पहुंचाऊंगा फिर उसे (उस के कुफ़्र के बाइस) दोज़ख़ के अ़ज़ाब की तरफ़ (जाने पर) मजबूर कर दूंगा और वोह बहुत बुरी जगह है।

وَ اِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَ اِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٢٧﴾

127. और (याद करो) जब इब्राहीम और इस्माईल (عليهما السلام) ख़ानए का'बा की बुन्यादें उठा रहे थे (तो दोनों दुआ़ कर रहे थे) कि ऐ हमारे रब ! तू हम से (येह ख़िदमत) क़ुबूल फ़रमा ले, बे शक तू ख़ूब सुनने वाला ख़ूब जाननेवाला है।

رَبَّنَا وَ اجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَاۤ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۠ وَ اَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَ تُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٨﴾

128. ऐ हमारे रब ! हम दोनों को अपने हुक्म के सामने झुकने वाला बना और हमारी औलाद से भी एक उम्मत को ख़ास अपना ताबेए फ़रमान बना और हमें हमारी इ़बादत (और ह़ज के) क़वाइद बता दे और हम पर (रह़मतो मग़्फ़िरत) की नज़र फ़रमा, बेशक तू ही बहुत तौबा क़ुबूल फ़रमानेवाला महरबान है।

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ
يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَ يُعَلِّمُهُمُ
الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ؕ
اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۱۲۹﴾ ع ۱۵ ۸ ۱۵

129. ऐ हमारे रब ! उन में उन्ही में से (वोह आख़िरी और बरगुज़ीदह) रसूल (ﷺ) मब्ऊ़स फ़रमा जो उन पर तेरी आयतें तिलावत फ़रमाए और उन्हें किताब और हिक्मत की ता'लीम दे (कर दानाए राज़ बना दे) और उन (के नुफ़ूसो क़ुलूब) को खूब पाक साफ़ कर दे, बे शक तू ही ग़ालिब हिक्मतवाला है।

وَ مَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ اِلَّا
مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ
فِي الدُّنْيَا ۚ وَ اِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ
الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۳۰﴾

130. और कौन है? जो इब्राहीम (علیہ السلام) के दीन से रू गर्दां हो सिवाए इस के जिस ने खुद को मुब्तिलाए हिमाक़त कर रख्खा हो, और बे शक हम ने उन्हें ज़रूर दुन्या में (भी) मुन्तख़ब फ़रमा लिया था और यक़ीनन वोह आख़िरत में (भी) बुलन्द रुत्बा मुक़र्रिबीन में होंगे।

اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗۤ اَسْلِمْ ۙ قَالَ
اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۳۱﴾

131. और जब उनके रब ने उनसे फ़रमाया (मेरे सामने) गरदन झुका दो, तो अ़र्ज़ करने लगे : मैं ने सारे जहानों के रब के सामने सरे तस्लीम ख़म कर दिया।

وَوَصّٰى بِهَاۤ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ
وَ يَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِيَّ اِنَّ اللّٰهَ
اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ
اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ ؕ

132. और इब्राहीम (علیہ السلام) ने अपने बेटों को इसी बात की वसिय्यत की और या'क़ूब (علیہ السلام) ने भी (येही कहा) ऐ मेरे लड़को ! बे शक अल्लाह ने तुम्हारे लिए (येही) दीन (इस्लाम) पसन्द फ़रमाया है सो तुम (बहर सूरत) मुसलमान रेहते हुए ही मरना।

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ
يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا
تَعْبُدُوْنَ مِنْۢ بَعْدِيْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ
اِلٰهَكَ وَ اِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ
وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ وَّ

133. क्या तुम (उस वक़्त) हाज़िर थे जब या'क़ूब (علیہ السلام) को मौत आई, जब उन्हों ने अपने बेटों से पूछा तुम मेरे (इन्तिक़ाल के) बा'द किस की इबादत करोगे ? तो उन्हों ने कहा : हम आप के मा'बूद और आप के बापदादा इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ (علیہم السلام) केमा'बूद की इबादत करेंगे जो मा'बूदे यक्ता है, और

نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۳﴾

हम सब उसी के फ़रमांबरदार रहेंगे।

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۴﴾

134. वोह एक उम्मत थी जो गुज़र चुकी, उन के लिए वोही कुछ होगा जो उन्हों ने कमाया और तुम्हारे लिए वोह होगा जो तुम कमाओगे और तुम से उन के आ'माल की बाज़ पुर्स न की जाएगी।

وَ قَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۳۵﴾

135. और अह्ले किताब केहते हैं यहूदी या नसरानी हो जाओ हिदायत पा जाओगे, आप फ़रमा दें कि (नहीं) बल्कि हम तो (उस) इब्राहीम (علیہ السلام) का दीन इख़्तियार किए हुए हैं जो हर बातिल से जुदा सिर्फ़ अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जेह थे, और वोह मुशरिकों में से न थे।

قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَ مَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَ مَآ اُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۖ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۳۶﴾

136. (ऐ मुसलमानो !) तुम केह दो हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस (किताब) पर जो हमारी तरफ़ उतारी गई और उस पर (भी) जो इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और या'कूब (علیہ السلام) और उन की औलाद की तरफ़ उतारी गई और उन किताबों पर भी जो मूसा और ईसा (علیہ السلام) को अ़ता की गईं और (इसी तरह़) जो दूसरे अंबियाअ (علیہ السلام) को उन के रब की तरफ़ से अ़ता की गईं, हम उन में से किसी एक (पर भी ईमान) में फ़र्क़ नहीं करते, और हम उसी मा'बूदे वाहिद) के फ़रमां बरदार हैं।

فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا هُمْ فِيْ شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۳۷﴾

137. फिर अगर वोह (भी) इसी तरह़ ईमान लाएं जैसे तुम इस पर ईमान लाए हो तो वोह वाक़ई हिदायत पा जाएंगे, और अगर वोह मुंह फ़ेर लें तो (समझ लें कि) वोह मह़ज़ मुख़ालिफ़त में हैं, पस अब अल्लाह आप को उन के शर्र से बचाने के लिए काफ़ी होगा, और वोह ख़ूब सुननेवाला जाननेवाला है।

صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۖ وَّنَحْنُ لَهٗ عٰبِدُوْنَ ﴿۱۳۸﴾

138. (केह दो हम) अल्लाह के रंग में रंगे गए हैं) और किस का रंग अल्लाह के रंग से बेहतर है और हम तो उसी के इ़बादत गुज़ार हैं।

قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِي اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا
وَ رَبُّكُمْ ۚ وَ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ
اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ ۙ﴿۱۳۹﴾

139. फ़रमा दें : क्या तुम अल्लाह के बारे में हम से झगड़ा करते हो हालां कि वोह हमारा (भी) रब है और तुम्हारा (भी) रब है, और हमारे लिए हमारे आ'माल और तुम्हारे लिए तुम्हारे आ'माल हैं, और हम तो ख़ालि-स-तन उसी के हो चुके हैं।

اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ
وَ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ
كَانُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ قُلْ ءَاَنْتُمْ
اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ
كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ وَمَا
اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۰﴾

140. (ऐ अह्ले किताब !) क्या तुम येह केहते हो कि इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और या'कूब (عليه السلام) और उन के बेटे यहूदी या नसरानी थे, फरमा दें : क्या तुम ज़ियादह जानते हो या अल्लाह? और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो उस गवाही को छुपाए जो उस के पास अल्लाह की तरफ़ से (किताब में मौजूद) है, और अल्लाह तुम्हारे कामों से बे ख़बर नहीं।

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا
كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَ
لَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۱﴾ ع

141. वोह एक जमाअ़त थी जो गुज़र चुकी, जो उसने कमाया वोह उसके लिए था और जो तुम कमाओगे वोह तुम्हारे लिए होगा, और तुम से उनके आ'माल की निस्बत नहीं पूछा जाएगा।